चित्रकार डॉ0 सन्तोष सहानीः साक्षात्कार

प्रिया प्रधान
असिस्टेंट प्रोफेसर
हर्ष विद्या मन्दिर पी0जी0 कॉलेज,
रायसी, हरिद्वार, उत्तराखण्ड
ईमेलः pradhan2211priya@gmail.com

Reference to this paper should be made as follows:

Received: 17.04.2025
Approved: 24.05.2025

प्रिया प्रधान

चित्रकार डॉ0 सन्तोष सहानीः साक्षात्कार

Vol. XVI, Sp.2Issue May 2025
Article No.17, Pg. 138-144

Online available at
https://anubooks.com/special-issues?url=jgv-si-2-rbd-college-bijnore-may-25

DOI: *https://doi.org/10.31995/jgv.2025.v16iSI005.017*

सारांश

भारतीय समकालीन कला अपने गौरव की समृद्धि करती हुई विश्व पटल पर स्थापित कर प्रकाशमान हो रही है। भारतीय कलाकार प्रत्येक क्षेत्र मे अपने आपको स्थापित कर कीर्तिमान प्राप्त कर रहे है। इन्ही समकालीन भारतीय कलाकरो में ***डा० संतोष कुमार*** *जो भारतीय विषयों को लेकर अपने कैनवास पर गम्भीरता पूर्वक कार्य कर रहे है। इन्हीं के साथ मिलकर डा० प्रिया प्रधान द्वारा उनके जीवन एवं कलायात्रा पर विस्तृत चर्चा की गयी जिसके कुछ प्रसंग प्रस्तुत है।*

मुख्य बिंदु : *महिला उत्पीड़न, आजादी, कृष्ण, भक्ति उदासी, दैनिक जीवन*

**This article has been peer-reviewed by the Review Committee of JGV.*

https://doi.org/10.31995/jgv.2025.v16iSI005.017

प्रश्नः अपके परिवार में कौन–कौन है और मूल रूप से आप कहाँ के रहने वाले है?

उत्तरः मेरा जन्म 3 सितम्बर 1985 में मउ जिले के फतेहपुर ताल नरजा गॉव के, एक मध्यम परिवार मे हुआ था मेरी माता का नाम श्रीमती मालती देवी, व पिता श्री चन्द्रिका प्रसाद है जिन्होने मेरा लालन पालन बडे ही लाड–प्यार से किया। मेरी प्राराम्भिक शिक्षा दीक्षा पास के शहर भिखारीपुर में हुई और मेरे पिता सरकारी नौकरी से सेवा निवृत है। मेरा बचपन अपने दोस्तो प्रभुनाथ, संजय गौड निलेश, रामकेवल, योगेन्द्र दिनेश, बन्शी आदि दोस्तों के साथ बड़े मजे से गुजरा, मुझे क्रिकेट का भी शौक है।

प्रश्नः आप को कला की प्रेरणा कहाँ से मिली?

उत्तरः मैं बचपन से ही क्रिकेट खेला करता था जो मुझे बहुत पसंद था और हमारी एक टीम भी बनी हुई थी जो दूर–दूर खेलने के लिए भी जाया करती थी इसी बीच मेरे, एक दोस्त ने शहनशाह नामक फिल्म के एक हीरो अमिताभ बच्चन का, एक चित्र चित्रित किया था। उसको देखकर मेरे मन में भी उत्सुकता जागी, जिसके पश्चात् मैने भी यह चित्र बनाने का प्रयास किया और जैसे–तैसे करके मैने वह चित्र बना दिया जिसका असर यह हुआ कि लोगों को ये चित्र बहुत ज्यादा पसन्द आया और सबका प्यार मिला इस प्रकार से मैने कला जीवन की नींव रखी गयी इसके बाद मैने अपने नामी हीरो – हिरोइनों के बहुत सारे चित्र बनाये। उसके बाद तो ये सिलसिला, एक के बाद, एक बढता ही चला गया।

प्रश्नः आपने चित्रकला की शिक्षा कहाँ से और किससे ग्रहण की ?

उत्तरः आरम्भिक शिक्षा मैंने आस–पास के सरकारी स्कूलों से ग्रहण की उस समय भी मुझे चित्र बनाने का बहुत शोक था जिस दौरान एक बार तो स्कुल टीचर ने मुझे चित्र बनाने के उपर बड़े प्यार से मेरी पिटाई भी की परन्तु कुछ दिनों बाद प्रोत्साहन भी दिया व अपना एक चित्र मुझे बनाने के लिए दिया। मैने बहुत ही लगन व मेहनत से चित्र को बनाया जब मैनें अपने अध्यापक शिवचरन चौहान सर को उनका चित्र दिखाया तो वह देखते रह गये और उन्होंने बोला कि तुम एक दिन बहुत बडे कलाकार बनोगें। उस समय मानो परमात्मा का आर्शीवाद मिल गया हो ऐसा प्रतीत हुआ। मन साकारात्मक उर्जा से भर उढ़ा और मैंने कलाकार बनने की दिशा मे प्रयास करना प्रारम्भ कर दिया, जो कि आज भी लगातार जारी है। इसके पश्चात उच्चतम शिक्षा के लिए मेरी बातचीत डॉ० सुनील विश्वकर्मा से हुई डॉ० सुनील विश्वकर्मा जी से मुझे बहुत सारे कला के आयाम सीखने को मिले और मेरा स्नातक महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ वाराणसी से पूर्ण हुआ। साथ ही डॉ० लक्ष्मण प्रसाद, सुनील कुशवाह, अमित कुमार जी से कला की अनेक विधा एवं बारीकियों को निरन्तर सिखने को मिला। गुरूओं के आर्शीवाद से ही मैं कला में सत्य के दर्शन करने में सक्षम हो पाया व सच्चे कलात्मक गुणों से स्वंय का परिचय करा पाया। इसके पश्चात् 2010 में **ललित कला विभाग कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय** से मैंने मास्टर की डिग्री में **स्वर्ण पदक प्राप्त** किया ''यही से मुझे कला में सौन्दर्य की अनुभूति होने लगी और कला में प्यार अनुभव हुआ'' कला और प्यार में इतना सुखद अनुभव होता है कि दूनिया इतनी प्यारी लगने लगती है मानो प्रकृति की प्रत्येक वस्तु से प्रेम बरस रहा हो। जब मैं एम०एफ०ए० के गुरू प्रोफेसर राम विरंजन जी के चित्रों को देखा तो उन रंगों को महसूस किया। मुझे उन रंगो से जो अनुभव हुआ उनके चित्रों में भली–भॉति था जो आज भी है।

प्रश्नः अपने चित्रों के विषय के बारे में बताइए ?

उत्तरः मेरा कला के प्रति प्रेम और समर्पण रहा है। इसके अलावा अनेकों कलाकारों का कार्य भी मुझे मोहित कर लेता था अपने चित्रो में उन्होंने मुख्य रूप से नारी के सौन्दर्य को चित्रित करते है, जो उनकी

रचनाओ में देखा जा सकता है डॉ० सुनील विश्वकर्मा के कार्यो ने उन्हे आकृर्षित किया है और बहुत कुछ सिखाया है, जो आज उनकी कला में चार चाँद लगा रहा है।

प्रश्नः आपका एक चित्र महिला उत्पीड़न पर बना है इसके पीछे आपके क्या विचार है ?

उत्तरः महिला उत्पीडन अपने कई रूपो में दुनिया भर में एक प्रचालित और गहरा मुद्दा बना हुआ है। मौखिक दुर्व्यवहार से लेकर शारीरिक हमले तक कार्यस्थल पर भेदभाव से लेकर ऑनलाइन ट्रोलिंग तक महिलाओं को दैनिक आधार पर उत्पीड़न की विभिन्न अभिव्यक्ति का सामना करना पडता है। लैंगिक समानता में महत्वपूर्ण प्रगति के बावजूद, उत्पीडन की निरंतरता इस गंभीर सामाजिक समस्या के समाधान के लिए निरन्तर जागरूकता, वकालत और कारवाई की तत्काल आवश्यकता को रेखांकित करती है।

इस व्यापक समस्या से निपटने कि लिए महिलाओं को अपने अधिकारों का दावा करने और उत्पीड़न के लिए जवाब देही की माँग करने कि लिए सश्क्त बनाने की आवश्यकता है। शिक्षा और जागरूकता कला अभियाान सामाजिक दृष्टिकोण को चुनौती देने और महिलाओं की स्वयत्ता और गरिमा के प्रति सम्मान को बढावा देने में महत्वपूर्ण भुमिका निभाते है। सभी प्रकार के उत्पीड़न के खिलाफ मजबूत सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए कानूनी ढॉचे को मजबूत किया जाना चाहिए, जिसमें अपराधियों को जवाबदेह ठहराने और बचे लोगों को सहायता प्रदान करने के तन्त्र मजबूत हो, जहाँ व्यक्ति उत्पीड़न को रोकनें और पीडितों का समर्थन करने के लिए सक्रिय रूप से हस्ताक्षेण करते है, महिलाओं के विकास के लिए सुरक्षित वातावरण बना सकते है।

प्रश्नः आप अजन्ता के चित्रो से कितने प्रभावित है ?

उत्तरः मैने अजन्ता एलोरा के एतिहासिक मूर्तियों एवम् चित्रों को बहुत समय तक स्टडी किया ओर पाया कि उसी रूप को लेकर और कितने रूपों का निर्माण कर सकते है और कैसे उसी रूप को बना सकते है। रंगों की जो विविधता उन्होंने बनायी है। उसे उसी रूप में ओर अलग ढंग से कैसे प्रस्तुत कर सकते है व सभी विधाओ में कार्य करता हूँ लेकिन विशेष रूप से मैं एक्रेलिक रंगों का अधिक चुनाव करता हूँ और उसी को चित्रों में प्रयोग करता हूँ। मुझे भिन्न –2 प्रकार के टेक्सचर निकालकर कार्य करना बहुत पसंद आता है। मेरा यह मानना है कि कला को हर दिन एक नया आयाम प्रदान करना चाहिए जिससे उसे नये रूप मिल सके। उसके बहुत से कारण है–यदि किसी छात्र–छात्रा को सही दिशा में तैयार किया जाये तो उसे नौकरी की आवश्यक्ता नहीं, वह स्वंय ही अपर कार्य करके एक कामयाब व्यक्ति बन सकता है।

प्रश्नः समकालीन कला को आप किस नजरिये से देखते है ? ओर यह नयी पीढ़ी को किस प्रकार से प्रभावित कर रही है?

मैं इसे दो प्रकार से देखता हूँ।

1. एक तो पहलू पूरी तरह से हमारी सांस्कृतिक विरासत कला को छोडकर के नये आयाम को थोपा जाना।

2. दूसरा जो अपने एतिहासिक कला को लेकर उसे आधुनिक रूप में प्रस्तुत करके भी एक नया रूप लाया जा सकता है और कलात्मक विरासत को सुरक्षित किया जा सकता है। दोनों ही पहलू समाज में इस समय चल रहे है। साथ ही मेरा मानना है कि यदि हम कला विषय पढा रहे है तो पहला कर्तव्य हमारा बनता है कि हम छात्रों को क्या परोस रहे है ओर क्या दे रहे है किन किन माध्यम से कितना ज्ञान दे रहे है ताकि उस विषय के प्रति छात्रों को उत्सुकता व जागरूकता हो रही है या नही जो भी नये विद्यार्थी कला के क्षेत्र में आ रहे है उन्हें किस प्रकार का परिवेश मिलना चाहिए जिसमें वो भली प्रकार से कार्य कर सकें ये हमारा

https://doi.org/10.31995/jgv.2025.v16iSI005.017

कर्तव्य होना चाहिए कि उसे किस प्रकार से प्रेरित किया जायेगा कला के प्रति। जिससे कला के आयाम की नयी सम्भावनायें बनेगी

महिला उत्पीड़न

महिला उत्पीड़न, अपने कई रूपों में, दुनिया भर में एक प्रचलित और गहरा मुद्दा बना हुआ है। मौखिक दुर्व्यवहार से लेकर शारीरिक हमले तक, कार्यस्थल पर भेदभाव से लेकर ऑनलाइन ट्रोलिंग तक, महिलाओं को दैनिक आधार पर उत्पीड़न की विभिन्न अभिव्यक्तियों का सामना करना पड़ता है लैंगिक समानता में महत्वपूर्ण प्रगति के बावजूद, उत्पीड़न की निरंतरता इस गंभीर सामाजिक समस्या के समाधान के लिए निरंतर जागरूकता, वकालत और कार्रवाई की तत्काल आवश्यकता को रेखांकित करती है।

इस व्यापक समस्या से निपटने के लिए महिलाओं को अपने अधिकारों का दावा करने और उत्पीड़न के लिए जवाबदेही की माँग करने के लिए सशक्त बनाने की आवश्यकता है। शिक्षा और जागरूकता अभियान सामाजिक दृष्टिकोण को चुनौती देने और महिलाओं की स्वायत्तता और गरिमा के प्रति सम्मान को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। सभी प्रकार के उत्पीड़न के खिलाफ मजबूत सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए कानूनी ढाँचे को मजबूत किया जाना चाहिए, जिसमें अपराधियों को जवाबदेह ठहराने और बचे लोगों को सहायता प्रदान करने के लिए तंत्र मौजूद हों। इसके अलावा, सहयोगिता और एकजुटता की संस्कृति को बढ़ावा देना, जहाँ व्यक्ति उत्पीड़न को रोकने और पीड़ितों का समर्थन करने के लिए सक्रिय रूप से हस्तक्षेप करते है, महिलाओं के विकास के लिए सुरक्षित वातावरण बना सकते हैं।

रेड लाइट एरिया

रेड लाइट जिला या आनंद जिला एक शहरी क्षेत्र का एक हिस्सा है जहाँ वेश्यावृत्ति और सेक्स–उन्मुख व्यवसाय, जैसे कि सेक्स की दुकानें, स्ट्रिप क्लब और वयस्क थिएटर पाए जाते हैं। ज्यादातर मामलों में, रेड लाइट जिले विशेष रूप से महिला सड़क वेश्यावृत्ति से जुड़े होते हैं, हालांकि कुछ शहरों में, ये क्षेत्र पुरुष वेश्यावृत्ति के स्थानों और समलैंगिक स्थानों के साथ मेल खा सकते हैं। दुनिया भर के कई बड़े शहरों के क्षेत्रों ने रेड–लाइट जिलों के रूप में अंतरर्राष्ट्रीय ख्याति हासिल कर ली है। मुंबई में स्थित, कमाठीपुरा एशिया के सबसे पुराने रेड लाइट जिलों में से एक है। इसका एक लंबा इतिहास है जो औपनिवेशिक काल से जुड़ा है। व्यापार को खत्म करने के प्रयासों के बावजूद, कमाठीपुरा भारत की वित्तीय राजधानी में यौन कार्य के मुद्दे से जुड़ी जटिलताओं को उजागर करते हुए काम करना जारी रखता है।

महिलाओं की आजादी

हम सभी मानवाधिकार के हकदार हैं। इनमें हिंसा और भेदभाव से मुक्त जीवन जीने का अधिकार शामिल है। शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के उच्चतम प्राप्य मानक का आनंद लेना। शिक्षित होना। संपत्ति का स्वामी होना। मतदान करना और समान वेतन अर्जित करना। भारतीय संविधान लिंग के आधार पर भेदभाव पर रोक लगाता है और सरकार को उनके लिए विशेष उपाय करने का अधिकार देता है। भारत के संविधान के तहत महिलाओं के अधिकारों में मुख्य रूप से समानता, गरिमा और भेदभाव से मुक्ति शामिल है। इसके अतिरिक्त भारत में महिलाओं के अधिकारों को नियंत्रित करने वाले विभिन्न कानून हैं। भारत के स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं ने महत्वपूर्ण जिम्मेदारियाँ निभाईं। उन्होंने सार्वजनिक बैठकें कीं, विदेशी शराब और सामान बेचने वाली दुकानों पर धरना दिया, खादी बेची और राष्ट्रीय आंदोलनों में सक्रिय रूप से भाग लिया।

कृष्ण और गाय

भगवद् गीता में भगवान कृष्ण को गायों के रक्षक के रूप में दर्शाया गया है। कहा जाता है कि उन्हें गायों से गहरा लगाव था और उन्हें अक्सर देहाती माहौल में गायों से घिरे हुए बाँसुरी बजाते हुए दिखाया जाता है। हिंदू धर्म में, गाय को एक पवित्र जानवर माना जाता है और यह धन, शक्ति और मातृ प्रेम का प्रतीक है। एक बार श्री कृष्ण ने एक गाय से पूछा मैंने तुझे सींग दिए ताकि तू अपनी रक्षा कर सके पर तू तो कभी किसी को मारती ही नहीं। गाय बोली– हे कान्हा एक बार जब पूतना नाम की राक्षस ने तुम्हें अपना विषैला दूध पिलाया था तब भी तुमने उसे अपनी माँ की ही उपमा दी थी। ये मनुष्य तो प्रतिदिन मेरा ही दूध पीते हैं, ये भले ही मुझे माँ न माने पर में तो इन सभी को अपना पुत्र मानती हूँ, भला में कैसे इन्हें मार सकती हूँ भगवान की आंखों में अश्रु आ गए और उन्होंने उन्हीं अश्रु की बूंदों को अंजलि में लेकर ये संकल्प लिया कि मैं गाय को माँ की उपाधि दिलाऊंगा, प्राचीन बाछरू तीर्थ यहाँ सोरों के पास ही स्थित है । इस लीला स्थली के दर्शन को तमाम भक्तों का आगमन होता है। गर्ग संहिता में उल्लेख मिलता है. भगवान श्रीकृष्ण बलदाऊ गायों को चराते चराते यहाँ के जंगल में आए। यहाँ गाय चराते समय गाय और बछड़ों के झुंड में वत्सासुर यानि बछासुर नाम का राक्षस छल से शामिल हो गया। भारत में हिंदुओं द्वारा गायों को पवित्र माना जाता है। वे भगवान कृष्ण के पसंदीदा जानवर थे, और वे धन, शक्ति और प्रचुरता के प्रतीक के रूप में काम करते हैं।

https://doi.org/10.31995/jgv.2025.v16iSI005.017

डिप्रेशन (उदासी)

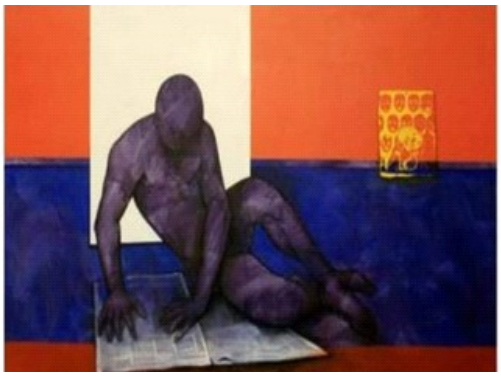

कभी–कभी उदास महसूस करना स्वाभाविक है, लेकिन अगर यह उदासी दिन–ब–दिन बनी रहे, तो यह अवसाद का संकेत हो सकता है। प्रमुख अवसाद अन्य लक्षणों के साथ–साथ उदासी या उदासीनता का एक प्रकरण है जो कम से कम लगातार दो सप्ताह तक रहता है और इतना गंभीर होता है कि दैनिक गतिविधियों में बाधा डालता है। अवसाद का कोई एक कारण नहीं है. यह कई कारणों से हो सकता है और इसके कई अलग–अलग ट्रिगर होते हैं। कुछ लोगों के लिए परेशान करने वाली या तनावपूर्ण जीवन की घटना, जैसे शोक, तलाक, बीमारी, अतिरेक और नौकरी या धन की चिंता, इसका कारण हो सकती है। कुछ लोगों के लिए परेशान करने वाली या तनावपूर्ण जीवन की घटना, जैसे शोक, तलाक, बीमारी, अतिरेक और नौकरी या धन की चिंता, इसका कारण हो सकती है। विभिन्न कारण अक्सर मिलकर अवसाद उत्पन्न कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, आप बीमार होने के बाद उदास महसूस कर सकते हैं और फिर शोक जैसी दर्दनाक घटना का अनुभव कर सकते हैं, जो अवसाद लाती है। लोग अक्सर घटनाओं के नीचे की ओर सर्पिल के बारे में बात करते हैं जो अवसाद की ओर ले जाती है। उदाहरण के लिए, यदि आपके साथी के साथ आपका रिश्ता टूट जाता है, तो आपको उदास महसूस होने की संभावना है, आप दोस्तों और परिवार से मिलना बंद कर सकते हैं और आप अधिक शराब पीना शुरू कर सकते हैं। यह सब आपको बुरा महसूस करा सकता है और अवसाद को ट्रिगर कर सकता है। कुछ अध्ययनों से यह भी पता चला है कि जैसे–जैसे आपकी उम्र बढ़ती है, आपको अवसाद होने की संभावना अधिक होती है, और यह उन लोगों में अधिक आम है जो कठिन सामाजिक और आर्थिक परिस्थितियों में रहते हैं। ऐसा माना जाता है कि गंभीर अवसाद होने की संभावना आंशिक रूप से आपके माता–पिता से विरासत में मिले जीन से प्रभावित हो सकती है।

Achievements

1. global Pride Award by ACF- Karnal,Haryana 2019
2. Guinness Book of world record,2017
3. Agnipath kala shree award,Delhi-2017
4. Natraj best artist award ,Rewari, Haryana-2017
5. Sanskar bharti 2017 award ,Meerut- 2017
6. Kala Ratna Award by Ek Najar-bhiwadi Rajsthan-2017
7. Kala shree award Bagpath,UP -2017
8. Nandlal Bose Ratn Award Rewari, Haryana-2017
9. Guinness book of world Record -2016
10. Rajya Lalit kala Academy Lucknow Kshetriya Award u.P 2016

11. Avinandan All india Painting Competition Chandigarh Punjab,2016
12. Natraj Art Zone National Lala ratn Award Rewari Haryana-2016
13. Natraj Art Zone Talent fair National art portrait Hunar Award Haryana-2016
14. Beti mahotsav,Beti Bachao – Beti Padhao Award Noida U.P 2016
15. Avinandan National Award Chandigarh Punjab 2016
16. Rasrang Guest of Honour Award New Delhi 2016
17. Lalit kala Academy North East Zone Ghaziabad-2015
18. North Zone Youth festival- Kurukshera university 2010
19. North zone Youth festival – Kurukshetra University 2009
20. Geeta Jayanti Painting Competitions Haryana, Awarded by Haryana.
21. Governor Jagarnath Pahadiya on 2009
22. Indian Oil Corporarion Ltd (Pipelines Division) (Haryana) 2009
23. Kala Parihad sketching Competitions (Haryana)2009
24. North Zone youth festival- chandiaarth-2008
25. The UNFPA art for social Change Awards first National Painting 2008
26. Ram Chhatparshilp Nyas, Sand Sculpture Competition Varanshi 2007
27. Ram Chhatpar Shilp Nyas sand Sculpture Competition ,Varanasi 2006
28. Lalit kala Competition ,kopagnaj MAU (UP) 2004